अमर उजाला

नई दिल्ली । शुक्रवार, 22 फरवरी 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

विदेश नीति को ऊर्जा, आर्थिक, रक्षा और घरेलू नीतियों का समर्थन करने की आवश्यकता है. ..

- चक हगेल

पूर्व अमेरिकी राजनेता

प्रधानमंत्री मोदी के साथ संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में पाकिस्तान का नाम लिए बगैर सऊदी युवराज सलमान ने आतंकवाद और चरमपंथ को भारत और सऊदी अरब दोनों की साझा चिंता बताकर आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के पक्ष का समर्थन ही किया है।

आतंकवाद के खिलाफ एकजुट

पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले में हुए पाकिस्तान परस्त जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी हमले की पृष्ठभूमि में भारत आए सऊदी अरब के युवराज मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) से यह स्वाभाविक ही अपेक्षा थी कि आतंकवाद के मामले में उनका रुख कैसा होगा। दरअसल भारत आने से पहले वह न केवल पाकिस्तान गए थे, बल्कि उन्होंने भीषण आर्थिक संकट से जूझ रहे अपने इस मित्र देश पर दरियादिली दिखाते हुए 20 अरब डॉलर के निवेश की घोषणा भी की। भारत और पाकिस्तान से सऊदी अरब के रिश्ते में एक तरह की तटस्थता है, सलमान की इन दोनों देशों की यात्रा के दौरान भी यह संतुलन देखा गया। इसके बावजूद यह नहीं भूलना चाहिए कि 2010 से भारत और सऊदी अरब रणनीतिक साझेदार हैं, और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सलमान की मुलाकात में दोनों पक्षों ने अपनी प्रतिबद्धता फिर दोहराई है। सलमान की पाकिस्तान यात्रा के बाद जारी दोनों देशों के संयुक्त बयान में हालांकि आह्वान किया गया था कि संयुक्त राष्ट्र की सूचीबद्धता तंत्र का 'राजनीतिकरण' करने से परहेज किया जाना चाहिए। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के साथ संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में पाकिस्तान का नाम लिए बगैर सलमान ने आतंकवाद और चरमपंथ को भारत और सऊदी अरब दोनों की साझा चिंता बताकर आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के पक्ष का समर्थन ही किया है। दोनों देशों के संयुक्त बयान में पाकिस्तान का न केवल उल्लेख किया गया है, बल्कि इसमें सऊदी युवराज ने प्रधानमंत्री मोदी की ओर से पाकिस्तान से बेहतर रिश्ते बनाने के लिए किए गए प्रयासों की तारीफ भी की। यही नहीं, आतंकवाद के मसले पर दोनों देश खुफिया जानकारियां साझा करेंगे और उन देशों पर दबाव बनाएंगे, जो आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। जाहिर है, इशारा पाकिस्तान की ओर है। आतंकवाद के मसले से इतर दोनों देशों ने पांच समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें नेशनल इन्वेस्टमेंट ऐंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, पर्यटन सहयोग और प्रसारण जैसे क्षेत्र अहम हैं। सऊदी अरब ने इसके तहत सौ अरब डॉलर के निवेश का भी वायदा किया है। दोनों देशों का एक दूसरे के लिए खास महत्व है, जो इस बात से भी पता चलता है कि अभी 27 लाख भारतीय सऊदी अरब में काम कर रहे हैं। वास्तव में सलमान की यात्रा ने दोनों देशों के रिश्तों की निरंतरता को ही आगे बढ़ाया है।

नए भारत के साथ बदलता सऊदी अरब

सऊदी अरब के शहजादे मोहम्मद बिन सलमान का दो दिवसीय भारत दौरा एशिया के दो ताकतवर मुल्कों के बीच संबंधों का नया अध्याय है। मोहम्मद बिन सलमान (एमबीएस) अपने मुल्क को उसकी पुरानी पहचान से निकालकर आधुनिक बनाना चाहते हैं। तरक्की के लिए वह अरब को उसके अब तक के बने-बनाए दायरे से निकालना चाहते हैं। उन्होंने हाल में कुछ ऐसे सुधारवादी फैसले लिए हैं, जिनके आधार पर ऐसी बातें कही जा सकती हैं। हालांकि उन पर आरोप भी लगते रहे हैं कि वह असल में सुधारवादी नहीं हैं। लेकिन हमें वही मानना चाहिए, जो कि आंखों से स्पष्ट दिखता है।

अपने इस अभियान में शहजादे एमबीएस नए विदेशी साझेदार की तलाश में हैं। उनका भारत दौरा इस बात की तस्दीक करता है कि उन्होंने भारत को अपना सबसे भरोसेमंद साथी बनाने का फैसला किया है। फिर इस बात पर कोई बहस नहीं होनी चाहिए कि भारत आने से पहले उन्होंने पाकिस्तान का दौरा किया। वह न सिर्फ पाकिस्तान गए, बल्कि उन्होंने वहां की इमरान खान सरकार से करीब बीस अरब डॉलर के निवेश के समझौते भी किए हैं। किसी भी देश को दो अलग-अलग मुल्कों से रिश्ते कायम करने का पूरा हक है, फिर चाहे वे मुल्क आपस में कितने ही बड़े दुश्मन क्यों न हों। और वैसे भी सऊदी अरब और पाकिस्तान के प्रगाढ़ ऐतिहासिक संबंध रहे हैं।

हां, यह जरूर है कि भारत व पाकिस्तान के उनके दौरे जिस वक्त हुए, वह सामान्य नहीं था। पुलवामा आतंकी हमले के बाद पूरे हिंदुस्तान में पाकिस्तान के खिलाफ वाजिब गुस्सा है। कश्मीर में घटित हुई इस कायराना हरकत की वजह से ही इस यात्रा पर लोगों का अतिरिक्त ध्यान गया। लेकिन हमें समझना होगा कि सऊदी शहजादे की यह यात्रा पूर्व निर्धारित थी। और इतने बड़े आतंकी हमले के बाद भी उन्होंने अपनी भारत यात्रा रद्द नहीं की। यह दिखाता है कि वह खुद आतंकियों को यह संदेश देना चाहते थे कि उनकी भारत यात्रा औपचारिकता से बढ़कर है।

पाकिस्तान फैक्टर को दरकिनार कर भारत को सऊदी अरब के साथ सकारात्मक रूप से आगे बढ़ना चाहिए। आने वाले समय में दोनों देशों के बीच और ज्यादा सहयोग देखने को मिल सकता है।

सलमान हैदर, पूर्व विदेश सचिव

दरअसल एमबीएस भारत की ताकत को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं। वह हिंदुस्तान की कामयाबी को सऊदी अरब की आकांक्षाओं के साथ मिलाना चाहते हैं। हमारे प्रधानमंत्री ने भी सऊदी शहजादे का गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी और एमबीएस के बीच लंबी बातचीत हुई। यकीनी तौर पर इस बातचीत में कश्मीर की दहशतगर्दी को लेकर भी चर्चा हुई होगी। ऐसे में हिंदुस्तान यह चाहता था कि एमबीएस इस मामले पर अपना पक्ष जरूर रखें। वह भी तब, जब अमेरिका से लेकर न्यूजीलैंड तक के दुनिया के दो अलग-अलग छोरों से इस आतंकवादी हमले की कड़ी भर्त्सना की गई, मगर इस मुद्दे पर सऊदी अरब ने साफ जबान से कुछ नहीं कहा। यह माना जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय मसलों पर इस कदर चुप रहना सऊदी अरब का अपना तरीका है। और सिर्फ इस चुप्पी के आधार पर सऊदी अरब से रिश्ते खराब करना कहीं से भी समझदारी नहीं है। अच्छी बात है कि अपने देश की हुकूमत यह अच्छी तरह से समझती है।

सऊदी अरब ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में 100 अरब डॉलर के निवेश की बात कही है। सऊदी अरब की ओर से यह निवेश ऊर्जा, तेल शोधन, पेट्रोकेमिकल्स, आधारभूत ढांचा जैसे क्षेत्रों में किया जाएगा। यह निवेश इसलिए भी हकीकत से दूर नहीं दिखता, क्योंकि 2016 में प्रधानमंत्री मोदी की सऊदी यात्रा के बाद सऊदी अरब भारत में कई अरब डॉलर का निवेश कर चुका है। इसके अलावा भारत के अनुरोध पर सऊदी ने अपनी जेलों में बंद 850 भारतीय कैदियों को रिहा करने का भी फैसला किया है। भारत जल्द ही सऊदी अरब के साथ नौसैनिक अभ्यास भी करने वाला है।

साथ ही दोनों देशों ने आतंकवाद से जुड़ी सूचनाओं के अदान-प्रदान की भी बात कही है और मनी लॉन्ड्रिंग को रोकने के बारे में भी कदम उठा रहे हैं। दोनों देशों के बीच कुल पांच समझौते हुए। इनमें नेशनल इन्वेस्टर फंड में निवेश, पर्यटन, हाउसिंग कॉरपोरेशन, प्रसारण जैसे क्षेत्र शामिल हैं। भारत की पहल पर सऊदी अरब के अंतरराष्ट्रीय सोलर अलायंस में भी शामिल होने की बात कही जा रही है। इन्हीं उपलब्धियों का नतीजा है कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सऊदी शहजादे की इस यात्रा से काफी खुश दिखे। शहजादे एमबीएस ने भी एक कदम आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री मोदी को अपना बड़ा भाई बताकर दोनों देशों के रिश्तों में और मिठास घोल दी।

निश्चित रूप से एमबीएस के इस दौरे से हमारी आर्थिक ताकत में इजाफा हुआ है। पाकिस्तान फैक्टर को दरकिनार कर भारत को सऊदी अरब के साथ सकारात्मक रूप से आगे बढ़ना चाहिए। बजाय इस अभिलाषा के कि कोई देश पाकिस्तान के प्रति हमारे रुख का समर्थन करे, हमें अपने स्तर से पूरी दुनिया के सामने पाकिस्तान की काली करतूतें सामने लाने में ऊर्जा लगानी चाहिए। क्योंकि सुबूतों के आधार पर हमारा तर्क और मजबूत होता है। आखिर भारत के दौरे पर आए सऊदी अरब के विदेश मंत्री अदेल-अल-जुबेर ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत का साथ देने की बात कही ही है। उन्होंने साफ तौर पर स्वीकारा है कि अगर जैश-ए-मोहम्मद और उसके प्रमुख मसूद अजहर के खिलाफ सुबूत हैं, तो उसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा वैश्विक आतंकवादी घोषित किया जाना चाहिए।

इस यात्रा से भारत और सऊदी अरब रिश्तों को एक नई ऊंचाई मिली है। आने वाले समय में दोनों देशों के बीच और ज्यादा सहयोग देखने को मिल सकता है। एमबीएस के नेतृत्व में सऊदी अरब हिंदुस्तान से बेहतर ताल्लुक रखना चाहता है, इसमें कोई दो राय नहीं है। ऊर्जा संसाधनों से भरे अरब को बदले में भारत की क्षमताओं का लाभ मिलेगा। जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि हर दो साल में दोनों देशों के बीच साझा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, इससे पता चलता है कि इस दोस्ती की जरूरत दोतरफा है।

अंतर्ध्वनि

>> अमृतलाल नागर

अराजकता को सत्य और न्याय से खत्म करना चाहिए

तानाशाही रूहानी नुकसान पहुंचाएगी। ठाकुरशाही, इस देश में गिरे-से-गिरे रूप में ही सही, पर विद्यमान अवश्य है। उसके खंडहरों पर नई तानाशाही की इमारत बड़ी ही भयावह कल्पना को आश्रय देती है। इन्हें सही तरीके से समझाने वाला भी कोई नहीं। अराजकता में प्रतिक्रियाएं तो सदा ही बड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया करती हैं। इतिहास ने सदा यों ही अपना नया पृष्ठ उलटा है। पर मैं उलझ जाता हूं। विश्व के इतिहास में बुद्धि का विकास, सामाजिक चेतना और एकात्मता का ज्ञान पहले कभी भी इस ऊंचाई पर नहीं पहुंचा था, जहां आज है। फिर भी इतिहास अपने पुराने ढर्रे पर ही करवट ले, यह तो कुछ समझ में नहीं आता। मगर समझ को तस्वीर का दूसरा रुख भी

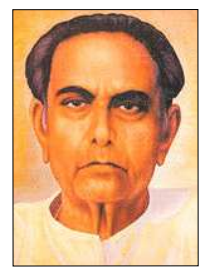

देखना पड़ता है। प्रस्तर युग से एटम युग तक मानवी विकास की जर्रे जैसी छिपी हुई, नामालूम या लापरवाही से पीछे ढकेल दी गई कमजोरियां आज इकट्ठी होकर एक बड़ा ढेर और बड़ी शक्ति हो गई हैं। युग की समाप्ति के साथ जब तक यह नहीं जाएंगी - आगे का जमाना भी झूठी प्रगतिशीलता का ही जामा ओढ़कर आएगा। व्यक्तिगत स्वार्थ, व्यक्तिगत सत्ता की ससीमता अपनी सामाजिक असीमता को देखकर डर रही है। इस सत्य को, इस डर को वह संधि की गांठ में बांधकर समाज को अपने पुराने ढांचे में नए मढ़े हुए कागज के साथ देखकर ही संतुष्ट हो जाना चाहता है। यह गलत है। समाज की व्याख्या, धार्मिक समाज, सांप्रदायिक समाज, अमीर समाज, गरीब समाज, राजनीतिक समाज के दायरे में नहीं की जा सकती-हरगिज नहीं। प्रांतीयता, राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता की दीवारों में भी समाज नहीं बंध सकता। उन्हें तोड़ना ही होगा। मनौविज्ञानिक की हैसियत से मैं फिसलनों का डर देखता हूं। उनसे बचने का एकमात्र उपाय है कि इस अराजकता को सत्य और न्याय की बुद्धि के प्रहार से खत्म कर देना चाहिए।

-हिंदी के दिवंगत उपन्यासकार

मंजिलें और भी हैं

>> मोहन कुमार एस

पत्नी के सहयोग से पॉलीथिन के खिलाफ अभियान

मैं केरल के कोल्लम का रहने वाला हूं और राजधानी तिरूवनंतपुरम में राज्य काजू विकास निगम में नौकरी करता हूं। लेकिन यह मेरा पूरा परिचय नहीं है। दरअसल पिछले कुछ वर्षों से मैं तिरूवनंतपुरम में प्लास्टिक के खिलाफ अभियान चला रहा हूं। दरअसल मैं वर्षों से प्लास्टिक के हमारे जीवन पर पड़ते दुष्प्रभावों के बारे में पढ़ता-सुनता आ रहा था। मैंने एक बार एक पर्यावरण विशेषज्ञ का भाषण सुना, जिससे मैं बेहद प्रभावित हुआ। वह कह रहे थे कि हमारे जीवन में प्लास्टिक कितना घुल गया है, यह जानने के लिए हमें एक कुदाल लेकर अपने घर के पास खुदाई करनी चाहिए। पांच फुट गहरा गड्ढा खोदने के बाद भी उसमें से प्लास्टिक निकलेगा। यह सुनने के बाद मैंने प्लास्टिक के खिलाफ अभियान चलाने के बारे में ठान लिया। मैंने इस बारे में सबसे पहले घर में पत्नी को बताया। वह मुझसे सहमत थीं और इस अभियान में मेरा हाथ बंटाने के लिए तैयार थी। लेकिन वह यह समझ नहीं पा रही थी कि यह काम आखिर किस तरीके से किया जाएगा। समझ तो मुझे भी कुछ नहीं आ रहा था, लेकिन इतना साफ था कि हम घर और बाहर प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचेंगे। इसके तहत मैंने सबसे पहले अपने घर में प्लास्टिक का बहिष्कार शुरू किया। पिछले कई वर्षों से मेरे घर में प्लास्टिक की कोई चीज नहीं आती।

मैंने लोगों से पुराने कपड़े मांगकर थैले बनाए और प्लास्टिक के खिलाफ अभियान चलाया।

मैं दुकान में भी प्लास्टिक के बजाय कपड़े के थैलों का इस्तेमाल करना चाहता था। मैंने इस बारे में मैनेजर और दूसरे लोगों को बताया। वे मुझसे सहमत तो थे, लेकिन इसमें कोई सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार नहीं थे। मैंने पत्नी को राजी किया, तो वह अपनी सिलाई मशीन पर कपड़े के थैले तैयार करने के लिए राजी हो गई। लेकिन उसके लिए कपड़े खरीदना महंगा सौदा था। मैंने एक योजना बनाई और आसपास जितनी भी टेलरिंग शॉप थी, उनसे जाकर कहा कि अगर वे अपने कटे और बेकार कपड़े मुझे दे दें, तो उनकी थैलियां बनाकर मैं प्लास्टिक के खिलाफ अभियान चला सकूंगा। ज्यादातर लोग तैयार हो गए। बल्कि जब उन्हें पता चला कि मैं पर्यावरण के पक्ष में यह अभियान चला रहा हूं, तो कई लोगों ने मशीन के धागे आदि भी देने का वायदा किया। मैं तमाम जगहों से कटे कपड़े इकट्ठा करता हूं और मेरी पत्नी उनसे थैले तैयार करती है। पिछले साल हमारे यहां बाढ़ आई, तो मैंने बड़े पैमाने पर कपड़े के थैले तैयार करने के बारे में सोचा। उस दौरान मदद सामग्री के तौर पर शहर के एक सेंटर में भारी मात्रा में इस्तेमाल किए हुए कपड़े आए। उनमें ऐसी साड़ियां थीं, जिनका इस्तेमाल करना संभव नहीं था। मैंने उनके थैले बनाने की बात कही, तो लोगों ने इसका समर्थन किया। उसी समय मैंने पूरे राज्य में प्लास्टिक के खिलाफ अभियान शुरू करने की योजना के बारे में सोचा। हर परिवार महीने में दस से पंद्रह पॉलीथिन का इस्तेमाल करता है। इस लिहाज से राज्य में हर महीने करीब साढ़े छह करोड़ पॉलीथिन की खपत है। मैंने अपने साथियों के साथ मिलकर एक योजना शुरू की है, जिसके तहत घर-घर जाकर लोगों से एक पुरानी साड़ी या बेडशीट ली जाती है, फिर उसके बदले में कपड़े के दस थैले बनाकर उन्हें दिए जाते हैं। चूंकि उन्हीं के घर के कपड़ों से थैले बनाकर इन्हें दिए जाते हैं, ऐसे में लोग भी इस योजना को बहुत पसंद कर रहे हैं। मैंने राज्य के मुख्यमंत्री को भी इस संबंध में एक प्रस्ताव बनाकर भेजा है, जो अभी विचाराधीन है। जीवन भर प्लास्टिक के खिलाफ मेरा यह अभियान जारी रहेगा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

जवानों को पूरी पेंशन क्यों नहीं

पहले अर्धसैनिक बलों की पेंशन का पूरा भार केंद्र सरकार उठाती थी, पर 2004 के बाद हर कर्मचारी को अपने वेतन का दस फीसदी जमा करना होता है और उन्हें पेंशन भी कम मिलती है। हर नागरिक को इनकी पुरानी पेंशन बहाली की मांग करनी चाहिए।

पुलवामा के आतंकी हमले में चालीस से अधिक जवानों की मौत ने लोगों का दिल दहला दिया है। प्रसार माध्यमों का असर बहुत अजीब होता है। पुलवामा जैसी बड़ी घटना होती है, तो उस पर और उससे जुड़े तमाम पात्रों के साथ लोगों की भावनाओं का जबर्दस्त जुड़ाव हो जाता है। घटना के फौरन बाद के घंटों और दिनों में प्रभावित लोगों और उनके परिवारों के लिए सब कुछ करने की प्रबल इच्छा हरेक हृदय में जागती है। और इस इच्छा का कुछ-कुछ क्रियान्वयन भी होता है। सरकारें परिवारजनों से तमाम वायदे करती हैं। पर कुछ दिन बीतने पर लोगों का ध्यान बंटने लगता है। यह स्वाभाविक भी है। आश्वासन कुछ पूरे किए जाते हैं, कुछ रह जाते हैं। बड़ी घटना के बाद छोटी घटनाओं में भी बहादुर फौजियों की मौतें होती हैं। पर इन छोटी घटनाओं में दिलचस्पी का स्तर भी कुछ छोटा होता है। यह स्वाभाविक तो है, पर न्यायपूर्ण नहीं। देश की सुरक्षा के लिए जान कुर्बान करने वालों के परिवारों के साथ न्याय करना नैतिकता का तकाजा है। जिनको सुरक्षित रखने के लिए ये जानें जाती हैं, उनका काम सिर्फ नारे लगाना, पीड़ित परिवारों की मदद करने की मांग उठाना या आश्वासन देना नहीं हो सकता। उन जवानों के परिवारों के भविष्य के बारे में सोचना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना होगा।

सोलह फरवरी को मैं पटना जिले के तारेगना गांव में गई थी। इस गांव के संजय कुमार सिन्हा भी पुलवामा हमले में शहीद हुए हैं। उनकी पत्नी पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी थीं। क्या कहें? कैसे सांत्वना दें? शब्द ढूंढे ही नहीं मिलते। तमाम घिसे-पिटे शब्द इस्तेमाल करने लायक नहीं लगते। बस कंधे पर हाथ रखकर, फिर पल भर के लिए गले लगाकर अपनी संवेदना को व्यक्त करने की कोशिश ही संभव होती है। पत्थर की मूर्ति बनी वह महिला अपने दुख के अलावा कितनी चिंताओं से घिरी होगी। अब परिवार में उसका स्तर क्या होगा? कोचिंग में पढ़ने वाले उसके बेटे की फीस का इंतजाम होगा या नहीं? दो बेटियों की जीवन यात्रा कैसे तय होगी?

सुभाषिनी सहगल अली

इन सारे सवालों ने तब और अधिक परेशान किया, जब उस गांव के एक पढ़े-लिखे लड़के ने मुझसे कहा कि सरकार तो बड़ी घोषणाएं करती है, पर सीआरपीएफ और अन्य अर्धसैनिक बल के जवानों, हवलदारों आदि की पेंशन व्यवस्था ठीक क्यों नहीं करती? जिन लोगों की नौकरी जोखिम भरी होती है, उनके लिए तो पेंशन का महत्व कहीं ज्यादा बढ़ जाता है। 2004 से पहले पेंशन का पूरा भार केंद्र सरकार उठाती थी और हर कर्मचारी को (जिनमें अर्धसैनिक बलों के कर्मचारी भी शामिल हैं) उनकी आखिरी तनख्वाह और महंगाई भत्ते का पचास फीसदी पेंशन के रूप में आजीवन और मौत होने पर उसकी पत्नी को आजीवन मिलती थी।

पर 2004 में नई पेंशन योजना लागू कर दी गई। इसके तहत हर कर्मचारी अपने वेतन का दस फीसदी जमा करता है और सरकार भी उतनी ही राशि जमा करती है। यह पैसा सार्वजानिक और निजी कंपनियों में निवेश के तौर पर लगाया जाता है और कर्मचारी की पेंशन-राशि निवेश की कमाई पर आधारित है। बाजार के उतार-चढ़ाव को देखते हुए पेंशन की राशि बहुत कम हो सकती है। नई पेंशन योजना के खिलाफ संघर्षरत कर्मचारियों का कहना है कि कुछ को तो सात-आठ सौ रुपये ही मिल रहे हैं। 2004 के बाद अर्धसैनिक बलों में भर्ती लोग भी नई पेंशन योजना के अंतर्गत ही पेंशन पाएंगे। इस योजना को रद्द कर पुरानी योजना बहाल करने की मांग उठाने का काम हर उस नागरिक को करना चाहिए, जो वास्तव में जान की बाजी लगाकर देश की सुरक्षा करने वालों के प्रति संवेदनशील है।

लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं।

खुली खिड़की

एयरबस ए-350

सिंगापुर एयरलाइंस ने आगामी मई महीने से बंगलूरू और सिंगापुर के बीच सप्ताह में तीन बार एयरबस ए-350 की उड़ान सेवा प्रदान करने की घोषणा की है। एयरबस लंबी दूरी के हवाई जहाज बनाने वाली दुनिया की प्रमुख कंपनी है। फिलहाल कतर एयरवेज इस श्रेणी के सर्वाधिक विमान प्रयोग करती है।

एयरलाइंस द्वारा प्रयोग की जाने वाली एयरबस ए-350 एस की संख्या

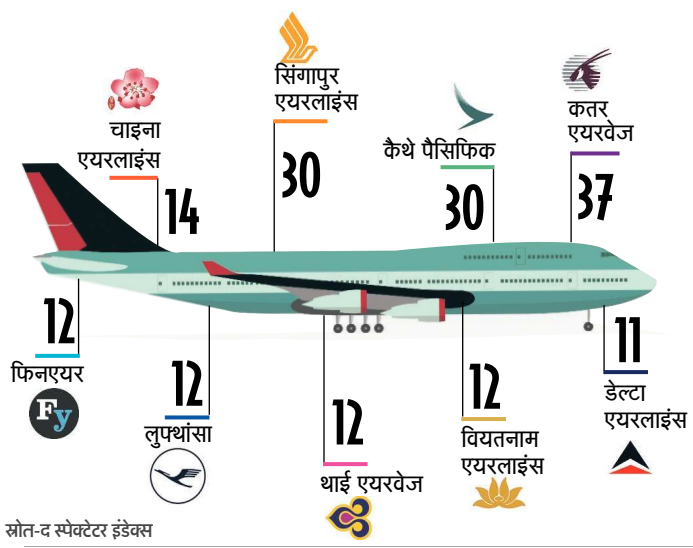

स्रोत-द स्पेक्टेटर इंडेक्स

धन-संपत्ति नहीं चाहिए

सत्संग

एक राजा के पास उसके गुरु आए, तो राजा ने उनका आदर-सत्कार करना शुरू किया। सुंदर रेशमी कपड़े, खूबसूरत जूते और एक थाली में कुछ मोहरें लाकर उसने गुरु के सामने रख दीं। गुरु ने कहा, राजन, यह सब मुझे किसलिए दे रहे हो? राजा ने कहा, गुरुदेव, यह सब आपको मेरी भेंट है, ताकि आपको किसी चीज की कमी महसूस न हो। गुरु समझ गए कि राजा को धन और ऐश्वर्य के अलावा कुछ सूझता नहीं। राजा की आंखें खोलने के लिए गुरु ने कहा, अगर तुम मुझे यह सब देना चाहते हो, तो तुम्हें मेरे लिए चार घोड़े और रथ का भी इंतजाम करना होगा। राजा ने कहा, अभी इंतजाम हो जाएगा। गुरु ने कहा, रथ रखने के लिए एक सुंदर महल चाहिए। राजा ने कहा, आज ही उसका निर्माण शुरू करवा देता हूं। गुरु ने कहा, महल में मैं अकेला नहीं रह सकता, तुम्हें मेरी शादी करानी होगी और फिर मेरे बच्चों का खर्च भी उठाना पड़ेगा। राजा ने कहा, यह तो मेरा सौभाग्य होगा। गुरु ने कहा, कल को मेरा कोई बच्चा अगर मर जाता है, तो कौन रोएगा? राजा ने कहा, गुरुदेव, रोना तो आपको ही पड़ेगा। गुरु ने कहा, इतना धन-ऐश्वर्य मिलने के बाद भी अगर मुझे रोना ही पड़ेगा, तो मैं संन्यासी के रूप में ही खुश हूं। मुझे तुम्हारी धन-संपत्ति नहीं चाहिए। राजा को समझ में आ गया कि गुरुदेव उसे रास्ते पर लाने के लिए ही यह सब कह रहे थे।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

डॉक्टर, गुरु और बीमारी

एक डॉक्टर की कहानी, जिसे उनके गुरु ने बार-बार बेहतर चिकित्सक होने की विशेषताएं बताईं।

डॉ. जॉन पैट्रो मशहूर डॉक्टर थे। वह रोग के लक्षण सुनकर बीमारी भांप लेते थे और सेवा भाव से मरीजों का इलाज किया करते थे। एक समय ऐसा आया कि डॉक्टर साहब की सारी दवाएं गलत होने लगीं। मरीज तो शिकायत करने ही लगे, डॉक्टर साहब को भी कोफ्त होने लगी कि मेरा कोई इलाज काम क्यों नहीं कर रहा। वह अपने गुरु से जाकर कहने लगे, मैं हालांकि अब भी उतनी ही शिद्दत से मरीजों का इलाज करता हूं, पर मेरी कोई दवा काम नहीं करती। मैं क्या करूं? गुरु जी ने मुस्कराते हुए कहा, तुम्हारा किताबी ज्ञान तो लाजवाब है, पर शायद तुम मरीजों की नब्ज पढ़ नहीं पा रहे। कोशिश करो, शायद काम बन जाए। डॉक्टर साहब वापस अपनी क्लीनिक लौटे और मरीजों की नब्ज देख बीमारी बताने लगे। इससे मरीजों को लाभ होने लगा। अब शहर में उनकी तीन क्लीनिक खुल गईं। कुछ साल बाद फिर उनके इलाज से मरीजों को लाभ होना बंद हो गया। डॉक्टर साहब फिर गुरु जी से मिले, तो वह कहने लगे, तुम नब्ज तो ठीक पकड़ते हो, पर अपने मरीजों की आंखों का दर्द महसूस नहीं कर पाते। अब डॉक्टर साहब मरीजों की बीमारी के साथ उनकी जिंदगी के दुख-दर्द भी पहचानने लगे। डॉक्टर को मरीजों से खूब दुआएं मिलीं और कुछ दिनों में उन्होंने बड़ा अस्पताल भी खोल लिया। फिर एक समय उनके इलाज का असर कमजोर पड़ने लगा, तो वह गुरु जी के पास आए। गुरु जी बोले, यह सिर्फ तुम्हारी सोच है, जो तुम्हें यहां तक लेकर आई है। तुमने कभी पैसों का लोभ नहीं किया, बल्कि हमेशा अपने मरीजों को बेहतर इलाज देने के बारे में सोचा। अब तुम पूरे विश्व को अपनी सोच से ठीक कर सकते हो। आजमाकर देखो, शायद काम बन जाए। डॉक्टर साहब की समस्या का समाधान हो गया।

जीवन को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखकर हम समस्याओं का हल कर सकते हैं।